SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 3, Issue-3, April-May-June : 2025
Published by Rangmati Publication https://www.rangmatipublication.com/

शोधकर्ता के व्यक्तित्व एवं शोध-निष्ठा में अंतर्संबंध

उमेश ध्यानी

शोध-सार

जिज्ञासा, ज्ञानोपलब्धि व उसका संक्रमण मानवता के विकास के साधक हैं, तो शोध उसके लिए किया जाने वाला सचेष्ट प्रयास और इस चेष्टा का वाहक है, शोधकर्ता। 'शोधकर्ता' के लिए एक विशिष्ट व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्ति के समस्त गुण-अवगुणों का पुंज। एक शोधकर्ता को उदार, सामाजिक, तार्किक व स्वस्थ व्यक्तित्वशाली होना चाहिए।

इस शोध पत्र में शोधकर्ता की इस निष्ठा अर्थात् श्रद्धा का अवलंब कौन हो, इसकी छानबीन की गयी है। शोधकी प्रविधि वस्तुनिष्ठ व तथ्यनिष्ठ है, जो कि शोध मूल्यों से नियमित होती है। अस्थिर संवेग, पूर्वाग्रह, कुसंस्कार आदि शोधकर्ता के व्यक्तित्व में अनपेक्षित हैं।

शोधक की निष्ठा तथ्यों पर केंद्रित होगी। तथ्य वास्तविक, निश्चयात्मक, अनुमान योग्य, कल्पना से रहित व वस्तुनिष्ठ सूचना पर आधारित होने चाहिए। शोध में अंतर्दृष्टि या प्रातिभ ज्ञान प्रमाण के रूप में मान्य नहीं है। शोधकर्ता किसी रूढ़ि का निर्वाह नहीं करता है। यदि तथ्य विपरीत हों तो वह परंपरा के विरुद्ध खड़ा होने की हिम्मत रखता है। यह हिम्मत शोधकर्ता के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग होनी चाहिए।

मुख्य शब्द : शोध, शोधकर्ता, व्यक्तित्व, निष्ठा, शोध मूल्य, शोध नैतिकता।

मानव के जिन गुणों ने उसे स्रष्टा की अन्य कृतियों में विशिष्टता प्रदान की है, उनमें से जिज्ञासा और मानव अर्जित ज्ञान को अगली पीढ़ी तक अग्रसारित कर पाने की क्षमता महत्वपूर्ण हैं। जिज्ञासा उसकी अनवरत ज्ञानोपलब्धि में सहायक होती है और निजी उपलब्धि को विरासत से प्राप्त ज्ञानराशि में युक्त कर वह आगामी पीढ़ी को सौंप जाता है। नयी पीढ़ियाँ इस क्रम को जारी रखती हैं व समय-समय पर परंपरालब्ध ज्ञान को नयी कसौटियों पर भी कसा जाता है। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान का पुनराख्यान व नवीन ज्ञान की प्राप्ति ज्ञान राशि के शोधन के दो प्रमुख आयाम हैं। यही 'शोध' है। 'शोध' शब्द प्रक्रिया और उपलब्धि दोनों का अभिधान सूचक शब्द है।[1]

ज्ञानराशि अनंत है। हम मानव उसको सम्पूर्णता में प्राप्त करने के क्रम में उसके अधिकाधिक भाग के रू-ब-रू होते जा रहे हैं। इस प्रकार शोध एक नित्य प्रक्रिया है, एक अंतहीन सिलसिला है। यह कार्य पूर्वकाल में ज्ञान-पिपासु मनीषियों द्वारा किया जाता था। आज सभ्यता के उच्चतर सोपानों पर ज्ञान प्रसार केंद्रों के रूप में विश्वविद्यालयों ने शोध को व्यवस्था, क्रमिकता व तथ्यपरकता या एक शब्द में कहें तो 'वैज्ञानिकता' प्रदान करने के लिए शोध कार्यों की सोपाधिक परंपरा स्थापित की है।

'सोपाधिक शोध'[2] के विभिन्न पक्षों में शोधकर्ता, निर्देशक, शोध-विषय, परीक्षक, विश्वविद्यालय व उपाधि आदि आते हैं। इनमें से शोधकर्ता, निर्देशक व शोध विषय चर[3] एवं अंतरंग और इसी प्रकार विश्वविद्यालय निरीक्षक व उपाधि इसके बाह्य प्रभावी पक्ष हैं।

'शोधकर्ता' व्यक्तियों के समूह में विशिष्ट ज्ञानानुशासन में विशेषज्ञता प्राप्त व्यक्ति है। ज्ञान रूपी सागर की गर्तों से मोती ढूँढ लाने के लिए विशेषज्ञता आवश्यक है, क्योंकि यह योग्यता ज्ञान-सागर के शौकिया तैराकों में नहीं होती। शोधकर्ता

उमेश ध्यानी, *शोध छात्र, हिंदी विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (उत्तराखंड), असिस्टेंट प्रोफेसर-हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयहरीखाल (उत्तराखंड)*

वह व्यक्ति है, जो शोधकार्य में संलग्न है। उसका उद्देश्य अपने विषय के नवीन अध्ययन, तथ्य संचयन, निर्वचन, विश्लेषण व मूल्यांकन आदि के द्वारा ज्ञान को और अधिक स्पष्ट करना है। उसकी दृष्टि अपने विषय पर केंद्रित है, लेकिन एक विशिष्ट व्यक्तिगतता का वाहक होने के कारण उसका व्यक्तित्व उसके दृष्टिकोण को भी विशिष्टता प्रदान कर सकता है।

व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द 'पर्सनैलिटी' का हिंदीरूपांतर है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द 'पर्सोना' से हुई हैं लैटिन भाषा में इस शब्द का अर्थ है 'मुखौटा'। इस तरह पर्सनैलिटी शब्द का अर्थ है, कि कौन व्यक्ति कैसा है अथवा कैसा दिखाई देता है। आईजैक, जो कि एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हैं, के अनुसार व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि व शारीरिक बनावट का थोड़ा बहुत स्थायी संघटन है, जो वातावरण के साथ उसके अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करता है।[4] इस प्रकार व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त गुण-अवगुण का पुंज है।

शोधकर्ता के संबंध में बात करते समय हमारी कुछ पूर्व अवधारणाएँ होती हैं, कि वह श्रेष्ठ व्यक्तित्व का वाहक होगा। अर्थात् उसमें-

- उच्च चारित्रिक विशेषताएँ होंगी।
- स्वभावगत उदारता व सामाजिकता होगी।
- उच्च बौद्धिक व तार्किक संपन्नता होगी।
- निहित शारीरिक स्वास्थ्य उसके शोध-क्षेत्र व प्रविधि के अनुकूल होगा।

शोधकर्ता के व्यक्तित्व की अवधारणा के स्पष्टीकरण के बाद 'शोध निष्ठा' का आशय ज्ञात कर लिया जाए तो इन दोनों के अंतसंबंध को समझा जा सकेगा।

'निष्ठा' शब्द का सामान्य अर्थ 'श्रद्धा एवं भक्ति' है।[5] यहाँ पर इसका अर्थ शोध कार्य के प्रति श्रद्धा से है। जिसे हम 'शोध मूल्यों' के प्रति निष्ठा कहते हैं। शोध मूल्य वे उच्चतम लक्ष्य है, जिनकी प्राप्ति हेतु शोधकर्ता शोधकार्य में प्रवृत्त होता है और ऐसा करते हुए वह मानवता के प्रतिनिधि के रूप में असीम ज्ञान के द्रष्टा की स्थिति प्राप्त कर लेता है। शोधकार्य के क्षेत्र में प्रविष्ट होते हुए शोधकर्ता को स्वयं में स्पष्ट कर लेना चाहिए कि शोध की प्रविधि विषयगत है, उसमें विषयी का कोई स्थान नहीं है। शोध का मुख्य उद्देश्य ज्ञान का प्रकटीकरण है। शोधकर्ता मानवमात्र को अनंत ज्ञान की एक किरण का परिचायक मात्र है। उसके अहं या निजत्व के लिए यहाँ कोई मंच नहीं है। ज्ञान असीम है, अथाह है। वह ब्रह्म का पर्याय है, अतः शोधकर्ता को एक श्रद्धावान सत्य-साधक की तरह इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए। उसे पता होना चाहिए कि शोधकार्य का अर्थ ज्ञान पिपासा के शमन से है और ज्ञान मानवता के लिए सत्य व शिवत्व का परिचायक है। इन श्रेष्ठ मूल्यों के बिना किया गया कार्य सामान्य अध्ययन या आलोचना मात्र बनकर रह जाएगा।

शोधकर्ता के व्यक्तित्व का शोधमूल्यों से संबंध जानने के लिए हम पुनः व्यक्तित्व निर्माण के प्रभावी कारकों को जानने का प्रयास करेंगे-

"व्यक्तित्व व्यक्ति के चेतन, अचेतन और अवचेतन क्रियाकलापों को स्वयं में निहित करता है।"[6] व्यक्तित्व के निर्धारक कारक जैविक, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक-सांस्कृतिक तीन वर्गों से आते हैं। जिनके अंतर्गत-आनुवंशिकता, बुद्धि, रुचियाँ, महत्वाकांक्षा का स्तर इच्छाशक्ति, संवेगात्मक विशेषताएँ, संस्कार, परंपरा व वातावरण सम्मिलित हैं। इन सभी वैयक्तिक विशेषताओं के समुच्चय शोधकर्ता में दो तरह से पुंजीभूत हो सकते हैं :

ऐसा व्यक्तित्व जो तथ्यों पर हावी हो।

या

ऐसा व्यक्तित्व जिस पर तथ्य या शोध के अन्य पक्ष हावी हो जायें।

उक्त दोनों प्रकार के व्यक्तित्व शोधकर्ता के रूप में ग्राह्य नहीं हैं। एक शोधक उक्त दोनों श्रेणियों के ठीक मध्य में संतुलन की स्थिति में रहते हुए कार्य करता है। इसीलिए कहा जाता है, कि शोधकार्य तलवार की धार पर चलने-सा है। उक्त दोनों प्रकार के व्यक्तित्वों में प्रथम प्रकार का व्यक्तित्व अपने गुणों, रुचि, अहं, महत्वाकांक्षा, संवेगों व परंपरा को तथ्य से ऊपर रखेगा जिससे तथ्यों में निहित सत्य छिप जायेंगे। जैसे शोधकार्य से निःसृत तथ्य यदि उसकी रुचि के न हुए, उसके पूर्वज्ञान को काटते हों, उसकी स्थापना (अभिकल्पित) में साधक न हों या उसकी पारंपरिक मान्यता के विरुद्ध हों, तो वह शोध के प्रति निष्ठावान नहीं रह पायेगा। वहीं दूसरी ओर ऐसा व्यक्तित्व जो निरा चंचल हो, तथ्यों से, रचनाकारों से प्रभावित हो। निर्णय न ले पाये, निर्देशक के अनुचित निर्देशों का प्रतिवाद न कर पाये। वह भी उच्च शोध मूल्यों की प्राप्ति नहीं कर पायेगा।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि उच्च शोध मूल्यों की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता में केवल और केवल सत्य के प्रति

निष्ठा होनी चाहिए। "शोध की आत्मा तथ्यों में बसती है। शोध वस्तुपरक होता है। अतः वस्तुपरकता बनाए रखने के लिए शोधकर्ता को तथ्यों के अनुशासन में बंधकर काम करना पड़ता है।"[7]

शोधक की निष्ठा तथ्यों पर केंद्रित होगी। तथ्य वास्तविक, निश्चयात्मक अनुमान योग्य, कल्पना से रहित व वस्तुनिष्ठ सूचना पर आधारित होने चाहिए। शोध में अंतर्दृष्टि या प्रातिभ ज्ञान प्रमाण के रूप में मान्य नहीं है। शोध परंपरा का निर्वाह नहीं करता है। यदि तथ्य विपरीत हों तो वह परंपरा के विरुद्ध खड़ा होने की हिम्मत रखता है। यह हिम्मत शोधकर्ता के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग होनी चाहिए। एक शोधकर्ता के व्यक्तित्व में निम्नवत् अंकित विशेषताओं का होना भी अनिवार्य है :

- शोधकर्ता की महत्वाकांक्षा उपाधि पाने के छोटे लक्ष्य तक न सिमटकर ज्ञान पाने की ललक व मानवता की ज्ञान सीमा में अपने योगदान की आकांक्षा जितनी विराट होनी चाहिए।
- शोधकर्ता की तर्क क्षमता व विश्लेषण क्षमता उच्च स्तर की होनी चाहिए।
- शोधकर्ता को अनवरत श्रम की क्षमता का विकास करना चाहिए।
- उसे तथ्यों के विश्लेषण व निष्कर्ष के लिए योग्य व्यक्तियों से निःसंकोच संवाद करना चाहिए।
- "शोधकर्ता को किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त रहना चाहिए। शोध पूर्ण होने तक शोधकर्ता अंतिम रूप से कुछ नहीं कह सकता है।"[8]
- शोधकर्ता के व्यक्तित्व में बौद्धिक ईमानदारी की अनिवार्य आवश्यकता है।
- "शोधकर्ता को भावुकता के आक्रमण के प्रति प्रत्येक क्षण सावधान रहना होता है।"[9] अन्यथा उसका शोध एक प्रभाववादी आलोचना बनकर रह जाएगा।
- शोधकर्ता में तथ्यों से उथले निष्कर्ष लेने (सामान्यीकरण) की प्रवृत्ति से बचने की आदत होनी चाहिए। अनुसंधानकर्ता में सामान्यीकरण की प्रवृत्ति निष्कर्षों में धोखा देने वाली साबित होती है।
- "सम्पूर्ण शोध लेखन में शोध छात्र पूर्णतः असंबद्ध और निर्वैयक्तिक होना चाहिए, उसे पूरा लेखन अन्य पुरुष शैली में वस्तुगत दृष्टि से संपन्न करना चाहिए। वैयक्तिक संदर्भ, संकेत और सूचनाओं का परित्याग किया जाता है।"[10]
- विनम्रता शोध-छात्र का बहुत बड़ा गुण है।

निश्चित तौर पर उपरोक्त गुण जिनके द्वारा शोधकर्ता की शोध-निष्ठा पुष्ट होती है, उसके व्यक्तित्व के ही अंश हैं। इसलिए शोधकर्ता की वस्तुनिष्ठता को व्यक्तित्व हीनता का पर्याय नहीं समझ लेना चाहिए। दरअसल एक अच्छा शोधकर्ता एक उच्चकोटि के सत्यनिष्ठ व्यक्तित्व का स्वामी होता है। लेकिन उसका सबसे बड़ा गुण विश्लेषण में निर्लिप्तता और विषय के अनवरत संग रहते हुए भी वैचारिक निःसंगता है। शोध का क्षेत्र समीक्षा से अन्योन्याश्रित होते हुए भी ठीक इस बिंदु पर उससे अलग हो जाता है। समीक्षा अपनी बात मनवाने के लिए तर्क जुटाती है जबकि शोध तर्कों के आधार पर विश्वास पैदा कराता है। बैजनाथ सिंहल के अनुसार 'शोधकर्ता यथापेक्षा आलोचक हुए बिना उद्देश्य रूप में शोध को सही परिणति प्रदान नहीं कर सकता। और डॉ. नगेंद्र तो कहते हैं कि "बिना आलोचना को अपनाए शोध हो ही नहीं सकता है।"[11] और जैसे ही आलोचना इस क्षेत्र में प्रविष्ट हुई, व्यक्तित्व भी अपना स्थान ले लेगा। लेकिन वह सामान्य संवेगों, पूर्वाग्रहों, संस्कारों, मान्यताओं से संचालित साधारण व्यक्तित्व न होकर एक शोधकर्ता का व्यक्तित्व होगा जो शोध-निष्ठा से अनुप्राणित व तथ्यों से प्रेरित होगा। शोध मूल्यों के प्रति निष्ठावान शोधकर्ता शोध प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है वह शोध शकट का सचल पहिया है, जो शो विषय की धुरी व तथ्यों की तीलियों पर चलता है। शोध निष्ठा इसका अंतरंग व शोध-निर्देशक बाह्य नियामक है।

इस प्रकारशोधकार्य के प्रति निष्ठावान शोधकर्ता से अपेक्षा होती है कि वह :

- ईमानदारी के साथ कार्य करे, अपनी विश्वसनीयता तथा सांवेगिक स्थिरता को बनाये रखे।
- सभी प्रकार के संचार, आंकड़ों, विधियों, परिणाम और प्रकाशन में ईमानदारी का पालन करे।
- अन्य विद्वानो की शोध में प्रयुक्त सामग्री को सदैव आदर सहित अभिस्वीकृति प्रदान करे।
- अध्ययन और प्रस्तुतीकरण में लिंग, नस्ल, जातीयता या अन्य कारकों के आधार पर भेदभाव से बचे।
- शोधकर्ता को व्यक्तिगत अभिलेख, व्यापार एवं संवेदनशील सूचना तथा यथावश्यक सूचनादाताओं की पहचान को गुप्त रखे।
- व्यावसायिक संवर्धन के साथ-साथ ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु भी प्रकाशन के लिए उत्तरदायी प्रकाशन को ही प्राथमिकता दे।

- मानव विषयों पर अनुसंधान करते समय, हानि और जोखिम को कम करे और लाभ को अधिकतम करे। मानवीय सम्मान, निजता और स्वायत्तता का सम्मान करे।
- प्रासंगिक कानूनों स्थानीय और संस्थागत और सरकारी नीतियों को जाने और उनका पालन करे।
- अनुसंधान में उपयोग करते समय जानवरों की उचित देखभाल की व्यवस्था करे।
- शोध द्वारा सामाजिक अच्छाई का प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास करे।
- अपने विषय तथा समाज के मानकों का सम्मान करे।
- आजीवन सीखने के माध्यम से अपनी व्यवसायिक क्षमता और विशेषज्ञता में सुधार करे।

संदर्भः

1. बैजनाथ सिंहल, 1999, शोधः स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 57

2. हालांकि निरुपाधि शोध पर भी इस सम्पूर्ण पत्र में उल्लिखित बातें समान रूप से लागू होती हैं, किन्तु वर्तमान संदर्भों में और विशेषकर इस शोध पत्र को लिखते हुए सोपाधिक शोध ही मनःस्थ है।

3. शोधकर्ता व निर्देशक का व्यक्तित्व परिवर्तनशील (चर) है और शोध विषय की सीमा तो निरंतर बढ़ ही रही है।

4. डॉ. एस.के. मंगल व डॉ. शुभ्रा मंगल, 2005, विद्यार्थी-विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, पृ. 286

5. डॉ. हरदेव बाहरी, 2000, हिंदी शब्दकोष, पृ. 243

6. डॉ. एस.के. मंगल व डॉ. शुभ्रा मंगल, 2005, विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, पृ. 288

7. बैजनाथ सिंहल, 1994, शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 57

8.बैजनाथ सिंहल, 1999, शोधः स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 62

9. वही, पृ. 58

10. प्रो. मैथिली प्रसाद भारद्वाज, 2005, शोध प्रविधि, पृ. 26

11. बैजनाथ सिंहल, 1994, शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 57